Volume VII, 2014 J. K. TIMES A Multidisciplinary International Journal ISSN: 2278 - 4047

गाँव की गंध पहचानती :- रेणु की कहानियाँ

अनिल कुमार सिंह, सेंगर
हिन्दी विभाग
जे० के० कालेज, पुरुलिया (प० बंगाल)

संक्षेप :

फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी के श्रेष्ठ आंचलिक कथाकार है, उनके आंचलिक उपन्यासों और आंचलिक कहानियों को श्रेष्ठता में किसी की संदेह नही हो सकता । आंचलिकता अर्थात विशिष्ठ भगोलिक परिवेश, अंचल विशेष कें विशिष्ठ जीवन, आंचलिक संस्कृति बोली आदि किसी कहानी को उत्तम बना सकता तो हर आंचलिक कहानी उत्तम कहानी हो सकती थी, लेकिन ऐसा नही हिन्दी में अनेक आंचलिक कहानिया लिखी गई आंचलिकता ने तीसरी कसम को विशिष्ठता प्रदान की है । हमारी दृष्टि में तीसरी कसम को श्रेष्ठता प्रदान करने वाली चीज उसकी वस्तु और उस वस्तु का सूक्ष्म, सफल और कलात्मक प्रस्तुतीकरण है । कथ्य और शिल्प का जैसा समंजस्य और संतुलन तीसरी कसम में है, वैसा कम ही कहानियों में देखने को को मिलता है । आंचलिक और ग्राम - कथा लेखन को एक विशिष्ट रुमानी प्रभावमण्डल में धेरने की लोक गीतों, पूर्व त्यौहारो और लोक संस्कृति की मिलि-जुली छवी चित्रित करती है। रेणु के शब्दो में अंचल को गंध का परिवेशन किया है । शब्द और ध्वनी से रूप, रस, स्पर्श, गन्ध का परिवेशन बोध और तीन बिन्दियाँ की शिल्प सीमा में गहरे अर्थों, उपेक्षित क्षणो और अनदेखे चित्रों की एक पूरी दुनिया रेणु ने रची है ।

मुख्य शब्दाबली : आंचलिक कहानी, फणीश्वर नाथ रेणु, रेणु और उनकी कहानियाँ ।

भूमिका :

रेणु की सोच दूर तक गाँव की जिन्दगी में डुबी हुई है। भारतीय गाँव, छोटे बड़े कस्बानुमा कभी-कभी शहर भी गाँवों का आभास देता है । मार्क्स ने इन ग्राम-समुदायों को नदी के द्वीप कहा था-जड़ और निरीह। रेणु के समकालीन गाँव एक लम्बे और कष्टकारी दौर से गुजर रहा था आजादी ने कम से कम इस कष्टकारी दौर को जनभावना के भीतर समाप्त कर दिया था । गाँव में यह भावना जन-आन्दोलन के माध्यम से पैदा हुई थी। अपने समकालीन ग्राम-समुदायों की निरीहता के बावजुद रेणु ने उन्हें जड़ नहीं पाया था। रेणु के साहित्य में गाँव जीवित है - धडकते हुए और प्रतिक्रिया करते हुए ।